भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्रसामारम

EXTRAORDINARY

भाग 1 --- लग्ड 1
PART I-Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

Rº 92]

नई बिल्ली, शनिवार, मई 23, 1970/ ज्येड्ड 2, 1892

No. 92]

NEW DELHI, SATURDAY, MAY 23, 1970/JYAISTHA 2, 1892

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या की जाती है जिससे कि यह ग्रसग संकलन के रूप म रक्ता जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

RESOLUTION

New Delhi, the 24th May 1970

No. 3/3/70-Pub. II.—The sudden passing away of Shri Panampilli Govinda Menon on 23rd May, 1970 has deprived the country of a dedicated patriot, a very able lawyer, a distinguished administrator and a fine parliamentarian.

Born on October 1, 1908, at Chalakudy in Trichur District Shri Govinda Menon had his education at Trichur and Trichinopoly and entered the legal profession after taking a law degree from Madras. He entered public life at an early age, devoted himself to the cause of responsible government in Cochin and took special interest in trade unionism and labour movement. He participated actively in the freedom movement and suffered detention for a considerable period.

Shri Menon was elected to the Cochin State Legislature in 1935 and was re-elected successively in 1938, 1945 and 1948. He joined the Government of Cochin initially as Minister of Food and was the Prime Minister of that State during the years 1946-47. On the formation of Travancore-Cochin State he served that State successively as Minister of Education. Minister of Finance, and during the years 1955-56 as Chief Minister.

Shri Menon was a member of the Constituent Assembly of India and served on two of its important committees. The understanding and insight acquired by him as a framer of the Constitution was reflected in the sagacity of his views as the Union Law Minister.

Before his election to the Third Lok Sabha in 1962 he was a member of the third Finance Commission. He was the first Chairman of the Parliamentary Committee on Public Undertakings constituted in 1964, and joined the Union Council of Ministers in January 1966 as Minister of Food. In March 1967 he became a member of the Union Cabinet as Minister of Law and in November 1968 was given in addition the portfolio of Social Welfare. For some months since November 1969 he held also the office of Minister of Railways.

Shri Menon represented the Government of India at several international conferences. He was Government of India's representative at the ILO Conference in Geneva in 1953, was the Leader of the Indian Parliamentary delegation at the Inter-Parliamentary Conference at Belgrade in 1963, and was the Leader of the Indian delegation at the FAO Regional Conference at Seoul in 1966.

Shri Menon's legal scholarship found expression in his writings of which his Manual of Agricultural Income Tax and his book on the Civil Procedure Code are notable. He also took deep interest in promoting the library movement. He was an accomplished speaker in English and an eloquent and powerful orator in Malayalam.

With his high sense of public duty Shri Menon worked without rest or respite, and regardless of his state of health continued to perform his duties as a Minister right up to the end. His sudden and premature death is a grievous loss to the people and the Government of India.

L. P. SINGH, Secy.

गृह मंत्रालय

संकल्प

नई दिल्ली, 24 मई, 1970

सं० 3/3/70-पिन्सिक (2):—श्री पनम पिल्ली गोविन्द मेनन के 23 मई, 1970 को हुए आकस्मिक निधन से हमारे देश ने एक निष्ठावान देश भक्त, आत्यधिक सुयोग्य वकील लब्ध प्रतिष्ठित प्रशासक ग्रीर श्रेष्ठ संसदीय नेता खो दिया है।

श्री गोविन्द मेनन का जन्म 1 अन्तुषर, 1908 को कें न क विचूर जिले के चालाकुडी नामक स्थान में हुआ था। उन्होंने त्रिचूर श्रीर तिचनापल्ली में शिक्षा प्राप्त की श्रीर मबास से कानून की उपाधि प्राप्त करने के बाद बकालत धारम्म की। उन्होंने श्रस्य श्रायु में ही सार्वजनिक जीवन में ही प्रवेश किया, ये कोचीन में उत्तरदायी शासन स्थापित करने के लिए जुट गये श्रीर उन्होंने ट्रेड यूनियन श्रीर मजदूर श्रान्दोलन के कार्य में विशेष रूचि ली। उन्होंने स्वतन्त्रता श्रान्दोलन में सिक्रय रूप मे भाग लिया श्रीर वे लम्बी श्रवधि तक नजरशन्द रहे।

श्री मेनन कोचीन राज्य विधान सभा के लिए सन् 1935 में निर्वाचित हुए श्रीर उसके बाद लगातार सन् 1938, 1945 श्रीर 1948 में पुनः निर्वाचित हुए। ग्रारम्भ में दें कोचीन सरकार में खाद्य मंत्री बने श्रीर सन 1946-47 में उस राज्य के शिक्षा मंत्री श्रीर वित्त मंत्री रहे श्रीर सन् 1955-56 में मुख्य मंत्री रहे।

श्री मेनन भारत की संविधान सभा के सदस्य थे स्रीर उन्होंने उसकी दो महत्वपूर्ण समितियों में कार्य किया। संविधान-निर्माता के कुष्ण में उन्हें जो सूझ बूझ श्रीर गहन दृष्टि प्राप्त थी वह केन्द्रीय विधि मंत्री के रूप में उनके विचारों की विचक्षणता में प्रकट होती थी।

सन् 1962 में तीसरी लोक सभा के लिए निर्वाचित होने से पहले वे तीसरे वित्त निगम के सदस्य थे। वे सन् 1964 में गठित सरकारी श्रौद्योगिक संस्थानों की संसदीय मिनित के पहले अध्यक्ष थे श्रौर जनवरी, 1966 में खाद्य मंत्री के रूप में केन्द्रीय मंत्री परिषद् में सम्मिलित हुए। वे मार्च, 1967 में विधि मंत्री के रूप में केन्द्रीय मंत्री मंडल के सदस्य बने श्रौर नवम्बर, 1968 में उन्हों विधि मंत्रालय के श्रीतरिकत समाज कल्याण विभाग भी दिया गया। नवम्बर, 1969 में उन्होंने कुछ महींनों के लिए रेल मंत्रालय भी सम्माला।

श्री मेनन ने श्रनेक श्रन्तराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने सन 1953 में जैनेवा में हुए श्रन्तराष्ट्रीय श्रम संगठन के सम्मेलन में भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में सन 1963 में बेलग्रेड में हुए श्रन्तर संसदीय सम्मेलन में भारतीय संसदीय शिष्ट मंडल के नेता के रूप में श्रीर सन 1966 में सियोल में हुए खाद्य श्रीर कृषि संगठन के क्षेत्रीय सम्मेलन में भारतीय शिष्ट मंडल के नेता के रूप में भाग लिया।

श्री मेनन का कानून का ज्ञान श्रौर विद्वारा उनके ग्रन्थों में प्रकट हुई, जिनमें उल्लेखनीय है कृषि श्राय कर मैनुऊल श्रौर सविल प्रक्रिया संहिता उन्हें पुस्तकालय ग्रान्वोलन में भी गहरी रुचि थी। वे श्रंग्रेजी के निष्णान वक्ता थे श्रौर मलयालम के श्रेष्ठ एवं प्रभावी भाषणकर्ता थे।

लोक कर्त्तं व्या की उदात्त भावना से प्रेरित श्री मेनन श्रविश्रांत एवं श्रनवरत रूप से कार्य करते रहे, श्रीर श्रपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करते हुए मंत्री के रूप में श्रपने कर्त्तं श्र का निर्वाह श्रन्त तक करते रहे । उनके श्राकस्मिक एवं श्रसामयिक निधन से भारत की जनता श्रीर भारत सरकार की श्रपार क्षति हुई है ।

> ल० प्र० सिंह, सचिव, भारत सरकार ।